बेटों द्वारा होने वाली उपेक्षा ही माता-पिता को बना देती है ' निर्वासित'

डॉ.बालाजी श्रीपती भुरे
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग,
शिवजागृति वरिष्ठ
महाविद्यालय, नलेगाँव
ता. चाकुर जि. लातूर।

नारी जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालनेवाली आधुनिक काल की प्रसिद्ध रचनाकार सूर्यबाला का जन्म 15 अक्टूबर 1944 को वाराणसी के एक कायस्थ परिवार में हुआ। उनका पूरा नाम सूर्यबाला वीरप्रतापसिंह श्रीवास्तव है। सूर्यबाला के पिता का नाम श्री वीरप्रतापसिंह और माता का नाम श्रीमती केशरकुमारी है। जिला विद्यालय के शिक्षा विभाग में उच्च अधिकारी के रूप में आपके पिता कार्यरत थे, तो माता एक आदर्श गृहिणी थी। लेखिका के संपूर्ण व्यक्तित्व पर उनके माता-पिता के संस्कार पाए जाते हैं। सूर्यबाला की बहन वीरबाला एक प्रसिद्ध साहित्यकार होने के कारण उसका भी प्रभाव लेखिका के साहित्य लेखन पर पड़ा हुआ दिखाई देता है।

सूर्यबाला जी की शिक्षा-दीक्षा वाराणसी में ही संपन्न हुई। आपने एम. ए. (हिन्दी) के पश्चात पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा पूर्ण होने के बाद एक वर्ष बनारस विश्वविद्यालय में तथा दो वर्ष वाराणसी के महाविद्यालय में व्याख्याता के पद पर आपने कार्य किया। तत्पश्चात पारिवारिक दायित्व को निभाने के लिए आप ने नौकरी छोड़ दी और गृहस्थी के साथ पूरी तरह से लेखन कार्य में जुट गई। आपने हिंदी साहित्य की विधाओं पर लेखनी चलाकर हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आपके द्वारा लिखित 'एक इंद्रधनुष्य जुबेदा के नाम', 'दिशाहीन मैं', 'थाली भर चांद', 'मुंडेर पर', 'गृह प्रवेश', 'मानुष गंध', 'यामिनी कथा' आदि कहानी संग्रह चर्चित हैं। साथ-ही-साथ आपने उपन्यास, व्यंग्य साहित्य, बाल साहित्य आदि विधाओं पर भी लेखनी चलाई है। आपका साहित्यिक योगदान देखकर सितंबर 1996 के प्रियदर्शनी पुरस्कार से तथा कात्यायनी के संवाद के लिए घनश्यामदास सराफ पुरस्कार से आपको सम्मानित किया गया है। आपकी कहानियाँ धर्मयुग, सारिका, ज्ञानोदय आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है। सूर्यबाला की 'निर्वासित' कहानी एक चर्चित कहानी है, जो 'एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम' कहानी संग्रह में से ली गई है। इस कहानी में बेटों द्वारा होलीवाली उपेक्षा वृद्ध माता-पिता को कैसे निर्वासित बना देती है इसे दर्शाने का प्रयास किया गया है। यहां निर्वाचित से तात्पर्य है अपने ही घर से निकाला हुआ और अपने ही अधिकारों से वंचित किया हुआ। जहाँ माता-पिता कडी मेहनत से अपना घर बनाते हैं और पूरी जिंदगी अपने बच्चों शिक्षा-दीक्षा तथा उनके सुखद भविष्य के लिए बिताते हैं लेकिन आधुनिक शिक्षा प्राप्त बच्चे अपने स्वार्थवश एवं आधुनिक सभ्यता के नाम पर

अपने ही माता-पिता को उनके द्वारा बने-बनाये घर से तथा उनके अधिकारों से वंचित कर रहे हैं। माता पिता को अपने बच्चों द्वारा हो रही उपेक्षा से निर्वाचित होकर जिंदगी बितानी पड़ रही है। ऐसे निर्वासित माता-पिता की वेदना को, उनकी कष्टदाई पीडा को यहां लेखिका ने निर्वासित कहानी में व्यक्त किया है। इस कहानी को समझने के लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर चिंतन करना आवश्यक होगा। जैसे -

कथावस्तु :-

'निर्वासित' कहानी के केंद्र में रिटायर बाबूजी और माँ जी हैं। राजेन और रणधीर उनके दो बेटे हैं। दोनों का ब्याह हुआ है और दोनों नौकरी के लिए अन्य शहर में रहते हैं। बाबूजी के रिटायर होने पर बड़े बेटे राजेन ने माँ और बाबूजी को पत्र लिखकर अपने पास रहने के लिए बुलाया। बेटे द्वारा बुलाने के बाद बाबूजी गाँव का अपना मकान किराए पर देकर अपनी पत्नी के साथ बेटे राजेन के यहाँ चले जाते हैं। बेटे के पास जाने की खुशी तो उन्हें होती है, लेकिन वहाँ जाने के बाद दोनों को पल पल बहू से अपमानित होना पड़ता है और ऐसे समय बेटा भी अपनी पत्नी का पक्ष लेते हुए बाबूजी और माँ की ओर उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। बार-बार अपने ही बेटे और बहु द्वारा प्रताड़ित होने से बाबूजी को लगता है कि अपना सब कुछ होने के बावजूद भी आज हमें निर्वासित जैसा जीवन जीना पड़ रहा है। यह बेटों द्वारा हो रही उपेक्षा माता-पिता के मन में टीस बनकर रह जाती है, जो पल-पल उन्हें पीड़ा देने लगती है। माता-पिता की इसी पीड़ा को निर्वासित कहानी में सूर्यबाला जी ने बड़ी सफलता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

मूल संवेदना :-

' निर्वासित ' से तात्पर्य घर से या देश से निकाला हुआ अर्थात जो किसी का आश्रित नहीं है। 'निर्वासित' कहानी में लेखिका ने वृद्ध माता-पिता की पीड़ा और बेटों द्वारा हुई उनकी उपेक्षा को अभिव्यक्त किया है। बेटे और बहू द्वारा हो रही उपेक्षा ही माता-पिता को निर्वासित बना देती है। क्योंकि हमेशा पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को जितना समझ आती है उससे भी बहुत कम हम नई पीढ़ी के लोग पुरानी पीढ़ी के लोगों को समझ पाते हैं। दो पीढ़ियों के बीच हो रहे इस वैचारिक संघर्ष के कारण आज बेटों द्वारा अपने माता-पिता की उपेक्षा हो रही है। ऐसा ही यहाँ माता-पिता को बेटे और बहू समझ नहीं पाते और उनकी उपेक्षा करते रहते हैं। बूढ़े माता-पिता की बेटों द्वारा होनेवाली उपेक्षा ही इस कहानी की मूल संवेदना है।

वृद्ध माता-पिता की पीड़ा :-

आधुनिक काल के भौतिकवादी युग में बेटे विकास के पीछे इतना दौड़ रहे हैं कि इस दौड़ में वे अपने माता-पिता से पूरी तरह से कटते जा रहे हैं। इस कहानी में रिटायर बाबूजी हैं, जिन्होंने अपने दो बेटों को पाल-पोसकर बड़ा किया, पढ़ाया-लिखाया और उन्हें जीने योग्य काबिल भी बनाया। लेकिन बेटे शादी के पश्चात अपनी-अपनी नौकरी के लिए चले गए। ऐसे में बड़े बेटे राजेन ने बाबूजी को अपने पास बुलाया, लेकिन वहाँ जाने के बाद उसकी पत्नी रीमा बार-बार अपनी सास और ससुर का अपमान करती है। यह देखकर राजेन न अपनी पत्नी को डांटता है बल्कि अपने माता-पिता की उपेक्षा ही करते रहता है। यह सब देखकर दोनों को निर्वासित जैसा लगता है। बाबूजी यहाँ रहने के बजाय छोटे लड़के के पास जाना उचित समझते हैं क्योंकि उन्हें दोनों का एक के पास रहना ठीक नहीं लगता। जब वे निकलते हैं तब माँ

जी भी उनके साथ चलने की बात करती है, तो उन्हें समझाते हुए उनका यह कहना कि,"अब जब दो बेटे हैं, तो एक ही दोनों का खर्च उठाये, ठीक नहीं लगता न...? है कि नहीं ? ठीक ही सोचा दोनों ने, अभी यहाँ बेबी छोटी है, तुम यहाँ रहोगी। सात आठ महीने बाद छोटी की डिलिवरी होगी... फिर तुम वहाँ चली जाओगी छोटे के पास। मैं यहाँ..."1 यह अपने ही बेटे पर माता-पिता के बोझ बनने की भावना को तथा बेटे द्वारा हो रही उनकी उपेक्षा को व्यक्त करता है।

बहू द्वारा सास ससुर की उपेक्षा :-

आज आधुनिक काल में वृद्ध माता-पिता की बेटों से अधिक बहुओं के द्वारा उपेक्षा हो रही है। कहानी में राजेन बाबूजी का बडा बेटा है और रीमा बहू। जब राजेश बाबूजी को पुराना घर किराए पर देकर अपने पास बुलाता है और बाबूजी और माँ जी, दोनों उनके पास घर आते ही जब सामान खोलने लगते है, तो उसे देखकर बहू का यह कहना कि," ओह मां जी, नौकर देखेंगे, तो क्या कहेंगे ! इसके पहले यहाँ जितने साहब आये, सब अंग्रेजी या ऐग्लो-इंडियन थे।"2 यह कहकर रीमा रुकती नहीं बल्कि हंसते हुए माँ की आत्मीय चीजों का मजाक उड़ाते हुए कहती है " भई वाह, मांजी तो चलता-फिरता म्यूजियम साथ लाई है !"3 इससे भी आगे जाकर रीमा का बाबूजी के पूजा-पाठ पर आपत्ति जताते हुए माँ जी से समझाते हुए यह कहना कि," मांजी, जरा बाबूजी से कहिएगा, इतनी जोर से पाठ न किया करें। वहाँ घर की बात और थी, यहाँ सब ऑफिसर्स ही रहते हैं। और फिर भगवान तो सब जगह है। देखिए न, कबीरदास जी ने भी कहा है- ता चढ़ी मूला बांग दे क्या बहिरा हुआ खुदाय। आप और बाबूजी मन-मन में पूजा कर लिया कीजिए, ये गुस्सा होते हैं।"4 यह आधुनिक एवं मॉडर्न होने के नाम पर माँ और बाबूजी को प्रताड़ित कर उनकी उपेक्षा करना मात्र है।

बेटों द्वारा माता-पिता की उपेक्षा :-

बड़े बेटे राजेन के बुलाने पर बाबूजी और माँ जी उनके पास जाने के लिए निकलते हैं। साथ में माँ जी अपने साथ बहुतसी चीजें लेना चाहा, लेकिन बाबूजी के मना करने के बावजूद भी वह रामेश्वर से लाया तीर्थ का तांबे का लोटा, घंटा-घड़ियाल और कन्हैया जी का पालना आदि सामान लेती है, जिसके प्रति उसे लगाव था। जब दोनों स्टेशन पर आते हैं, तो राजन अपने चपरासी के साथ उन्हें लेने के लिए वहाँ आता है। प्लेटफार्म पर फैले, थैले और बंडलों को देखकर राजेन पिताजी से कहता है कि," आपको तो मना किया था। बाबूजी, अम्मा को समझ नहीं, पर आप तो मना कर सकते थे। सौ बरस पुरानी सड़ी-गली चीजों का भला क्या होगा यहाँ !"5 यह कहते समय उसने यह सोचा नहीं कि जिसे सड़ी गली चीजें वह कह रहा है वह माँ की और बाबूजी के लिए कितनी प्यारी है। यहाँ तक कि अपनी पत्नी रीमा द्वारा बार-बार बाबूजी और माँ जी की प्रताडना होने के बावजूद भी वह पत्नी को तो डांटता नहीं उल्टे बाबूजी और माँ की ही उपेक्षा करते रहता है।

दो पीढ़ियों का वैचारिक संघर्ष :-

पुरानी पीढ़ी और आधुनिक पीढ़ी दोनों के विचार अलग-अलग होने के कारण आज दोनों के विचारों में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो रही है। 'निर्वासित' कहानी में बाबूजी और माँ जी पुराने विचारों को लेकर चलनेवाले पात्र हैं, तो उनके बेटे राजेन, रणधीर तथा बहू आधुनिक विचारों को लेकर चलनेवाले। बाबूजी और माँ जी अपने बेटे राजेन के घर जाने के बाद उनके साथ लाया हुआ पूजा-पाठ का साहित्य देखकर उसे बहू रीमा का म्यूजियम कहना आधुनिक विचारों को व्यक्त करता है, तो बाबूजी

और माँ जी का पूजा पाठ आदि अपनी परंपरा का पालन करना पुरानी पीढ़ी के विचारों को दर्शाता है। इतना ही नहीं पूजा पाठ करते समय बहू को और राजेन को बाबूजी द्वारा जोर से पूजा पाठ करना पसंद नहीं, वह उन्हें उबाऊ सा लगता है। ये आधुनिक विचार है, तो बाबूजी और माँ जी सबके साथ मिलकर स्नेह से रहना चाहते हैं। माँ जी के मन में बाबूजी के प्रति प्रेम है। वह बाबूजी का हर काम समय पर करती है, उनका ध्यान रखती है। लेकिन आधुनिक पीढ़ीवाले राजेन को लगता है कि पुरानी पीढ़ी अपने जैसा प्रेम कर ही नहीं सकती । जब माँ जी को बाबूजी के कमरे में जाती हुई देखकर रीमा अपने पति राजेन को कहती है कि, देखो वह कितना बाबूजी से प्रेम करती है, तब राजेन का यह कहना कि," प्रेम-शेम कुछ नहीं, अकेली बोर फील करती होगी, तो बाबूजी के पास जाकर बैठ जाती होंगी।"6 यह राजीव का पुरानी पीढ़ी के प्रेम को न समझना ही है। ऐसे समय दो पीढ़ियों के विचारों में टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है। दो पीढ़ियों के इस वैचारिक संघर्ष को कहानीकार ने यहाँ प्रस्तुत किया है।

आधुनिक सभ्यता का शिकार बेटा :-

आधुनिक काल की पीढ़ी इस भौतिकवाद के चकाचौंध की शिकार बनती जा रही है और इसमें अपने मूल्य परंपराएं तथा नैतिकता को भूलती जा रही है। इस कहानी में भी राजेन और उसकी पत्नी रीमा स्वयं को आधुनिक और मॉडर्न समझते हैं। उन्हें पुरानी वेशभूषा में अपने दोस्तों के सामने अपने बाबूजी और माँ को देखना अपमान सा लगता है। राजेन का बाबूजी से यह समझाते हुए कहना कि," बाबूजी, शाम को मेरे दोस्त वगैरह आते हैं न, तो प्लीज आप अंदर आ जाया कीजिए। असल में उन्हें ड्रिंक्स वगैरह चाहिए होती हैं। स्मोक भी करना चाहते हैं। आप बुजुर्ग ठहरे, आपके सामने झिझकते हैं।"7 यह राजेन का आधुनिक विचारों से प्रभावित होना दर्शाता है, जिसमें अपनेपन की भावना से दूर केवल दिखावा मात्र है।

माँ जी का बाबूजी के प्रति प्रेम :-

कहानी में चित्रित बाबूजी और माँ जी का एक दूसरे के प्रति अटूट प्रेम है, जो पति-पत्नी के बीच रहता है। एक आदर्श पत्नी के रूप में माँ जी बाबूजी की हर इच्छाओं का ध्यान रखती है, पूरी निष्ठा के साथ उनकी सेवा करती है, तो बाबूजी भी उन्हें तकलीफ न हो इसीलिए कई बार अपना काम स्वयं करते रहते हैं। माँ जी को बाबूजी के साथ कमरे में बैठी देखकर उनके प्रेम को लेकर रीमा अपने पति राजेन से कहती है, तो राजेन उनके प्रेम का मजाक उड़ाते हुए कहता है कि, प्रेम वगैरह कुछ नहीं अकेली बोर फील करती होगी इसलिए बाबूजी के पास जा कर बैठी होगी। तब रीमा का राजेन को यह कहना कि," वाह, जैसे मैंने देखा न हो ! मांजी के मना करने पर भी पिताजी अपने कपड़े खुद धो लेते हैं। चाय की खाली प्याली उनके मांगने पर भी किचेन में रख आते हैं। दिन में अधिक नहीं तो चार-पाँच बार दवा के लिए पूछते हैं- खायी कि नहीं ? खतम हो गई हो, तो ले आऊँ...8 यह माँ जी के प्रति बाबूजी के मन के प्रेम को तथा अपनेपन की भावना को व्यक्त करता है।

बाबूजी का मानसिक द्वंद्व :-

बाबूजी अपने बड़े बेटे राजेंद्र के बुलाने से अपना घर किराए पर देकर उसके पास तो जाते हैं, लेकिन वहाँ जाने के बाद बहू रीमा द्वारा अपनी और अपनी पत्नी की बार-बार प्रताड़ना होते देख तथा बेटे द्वारा अपनी और अपनी पत्नी की उपेक्षा होते देख दुखी एवं पीड़ित हो जाते हैं। अपना स्वयं का घर रहने के बावजूद बाबूजी और माँ जी को निर्वासित

जैसा जीवन जीना पड़ता है। ऐसे समय उनकी मानसिकता द्वंद्वात्मक विचारों से भर जाती है। वे वहाँ से वापस घर आना भी चाहते हैं लेकिन आ नहीं पाते। उन्हें अपने बेटे और बहू के प्रति क्रोध भी आता है, लेकिन अपने क्रोध को व्यक्त नहीं कर पाते। इसीलिए आखिर में वे अपनी घुटन से छुटकारा पाने के लिए छोटे बेटे रणधीर के पास जाना उचित मानते हैं। वे चाहते हैं कि पत्नी राजेन के यहाँ रहे और स्वयं रणधीर के यहाँ जाए। जब रणधीर की पत्नी की डिलीवरी हो तब वह रणधीर के पास आए और मैं राजीव के पास जाऊं। दोनों का किसी एक के पास रहकर उन पर बोझ बनना उन्हें उचित नहीं लगता। इस प्रकार बाबूजी की द्वंद्वात्मक मानसिकता इस कहानी में दिखाई देती है।

शीर्षक की सार्थकता :-

जहाँ बाबूजी बडे बेटे राजेन के बुलाने से अपनेपन की भावना से उसके पास रहने के लिए जाते हैं, लेकिन वहाँ तो राजेश तथा बहू के द्वारा अपनी और अपनी पत्नी दोनों की प्रताड़ना होती है। बार-बार उन्हें अपमानित किया जाता है। उनकी आजादी को छीना जाता है, उनपर पाबंदियाँ लगाई जाती है, तब उन्हें लगता है कि सचमुच अपना स्वयं का घर होकर भी हमें वहाँ से निकाला गया और हम निर्वासित जैसी जिंदगी जी रहे हैं। यह कहानी के शीर्षक की सार्थकता को व्यक्त करता है। कहानी का शीर्षक कहानी के आशय में ही छिपा हुआ है। कहानी पढ़ने के बाद पाठक को सहजता से समझ में आ जाता है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार सूर्यबाला जी ने अपनी 'निर्वासित' कहानी में वृद्ध माता-पिता की उस पीड़ा को व्यक्त किया है, जो अपने ही बेटे और बहू द्वारा बार-बार प्रताड़ित होते हैं, उनकी उपेक्षा की जाती है। साथ-ही-साथ आज की पीढ़ी पुरानी पीढ़ी को ठीक से समझ नहीं पा रही है। परिणाम स्वरुप दो पीढ़ियों के बीच वैचारिक संघर्ष हो रहा है। इस कहानी पर समग्रता से चिंतन करने के बाद हमारे सामने कुछ निष्कर्ष बिंदु आ जाते हैं। जैसे -

- 'निर्वासित' कहानी वृद्ध माता-पिता की पीड़ा और बेटों द्वारा हुई उनकी उपेक्षा को व्यक्त करती है।
- पुरानी और नई पीढ़ी के बीच आज वैचारिक संघर्ष बढ़ते जा रहा है। जहाँ हमेशा पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को जितना समझ आती है, उससे भी बहुत कम आज की नई पीढ़ी के लोग पुरानी पीढ़ी के लोगों को समझ पा रहे हैं।
- आधुनिक सभ्यता के नाम पर आज के युवक किस प्रकार अपनों से टूटते जा रहे हैं, कटते जा रहे हैं इसे यह कहानी व्यक्त करती है।
- आधुनिक सभ्यता के प्रभाव से अपने ही बेटों द्वारा उपेक्षित होकर आज परिवार में वृद्ध माता-पिता निर्वासित जैसा जीवन जी रहे हैं।
- वृद्ध माता पिता को अपने बेटों के साथ-साथ बहू के द्वारा भी पल-पल अपमानित एवं प्रताड़ित होना पड़ रहा है और बेटे अपनी ही पत्नी का पक्ष लेते हुए अपने माता पिता की उपेक्षा कर रहे हैं।

कुल मिलाकर इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने यह बताने का प्रयास किया है कि, हम अपना कितना भी विकास करें, कितना भी आधुनिक बनने की कोशिश करें, लेकिन हमें अपनी भूमि से अपने नैतिक मूल्यों से हटना नहीं चाहिए। जिन्होंने हमें जन्म दिया, पढाया-लिखाया और पाल-पोसकर जीने लायक बनाया उनके प्रति हमारा भी कर्तव्य है कि, उनकी वृद्धावस्था में हम उनका पूरा ध्यान रखें,

उन्हें अपना प्रेम दे, सच्ची निष्ठा से उनकी सेवा करें। यही इस कहानी के माध्यम से हमें संदेश मिलता है। इस उद्देश्य की पूर्ति करने में लेखिका को पूरी सफलता मिली है।

संदर्भ सूची :-

1) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.85
2) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.81
3) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.81
4) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.82
5) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.81
6) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.80
7) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.82
8) संपा. डॉ. बालाजी भुरे, डॉ. व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.80

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com